उपभोक्ता की बचत
Consumer's Surplus

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

6.0 उद्देश्य (Objectives)

6.1 परिचय

6.2 उपभोक्ता की बचत का अर्थ एवं परिभाषायें

6.3 उपभोक्ता की बचत की व्याख्या

6.4 उपभोक्ता बचत की माप

6.5 उपभोक्ता की बचत की आलोचना

6.6 उपभोक्ता बचत का व्यापारिक महत्त्व

6.7 सारांश

6.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

6.9 प्रस्तावित पाठ

Scanned with CamScanner

का बचत कहते हैं।

6.2 अर्थ एवं परिभाषा

अर्थशास्त्र में उपभोक्ता की बचत धारणा प्रो० मार्शल के नाम से जुड़ी हुई है लेकिन सर्वप्रथम इसकी व्याख्या सन् 1844 में ही ड्यूपित (Dupit) ने की थी। प्रो० मार्शल (Marshall) ने मूलतः इस धारणा का प्रतिपादन सन् 1879 ई० में अपने Pure theory of Domestic values में किया तथा इसे "उपभोक्ता का लगान' (Consumer's rent) के नाम से पुकारा। इस धारणा का विकास बाद में प्रो० मार्शल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (Principles of Economics) में किया तथा इसे उपभोक्ता की बचत कहा।

प्रो० मार्शल का विचार है कि उपभोक्ता की बचत का उदय विभिन्न अवसरों (Opportunities), वातावरणों (environments) अथवा स्थितियों के कारण होता है। प्रो० मार्शल ने उपभोक्ता की बचत की परिभाषा इस प्रकार दी है– 'किसी वस्तु से वंचित रहने के बजाय उपभोक्ता जो मूल्य देने को तैयार रहता है तथा वास्तव में जो मूल्य वह देता है उसका अन्तर ही संतोष की बचत की आर्थिक माप है। इसे उपभोक्ता की बचत कहा जा सकता है। (The excess of price which he (consumer) would be willing to pay rather than go without the thing over that which he actually does pay, is the economic measure of this surplus satisfaction. It may be called consumer's surplus.)

पेन्सन (Penson) के शब्दों में, "जो मूल्य हम देने को तैयार रहते हैं और वास्तव में जो मूल्य हमें देना पड़ता है, उसके अन्तर को उपभोक्ता की बचत कहते हैं।" (The difference between what we would pay and what we have to pay is called consumer's surplus.)

6.3 उपभोक्ता बचत की व्याख्या

उपभोक्ता की बचत के पीछे निम्नलिखित तीन तत्त्व काम करते हैं–

1. उपयोगिता ह्रास नियम,
2. सीमान्त उपयोगिता के बराबर मूल्य,
3. सभी इकाइयों के लिए समान मूल्य।

उपभोक्ता ज्यों-ज्यों अधिक वस्तुओं का उपभोग करता जाता है त्यों-त्यों प्रत्येक अगली वस्तु की सीमान्त उपयोगिता पिछली वस्तु की सीमान्त उपयोगिता की तुलना में घटती जाती है। वह किसी वस्तु की विभिन्न इकाइयों का तब तक उपयोग करता है अथवा उन्हें खरीदता है जबतक वस्तु की किसी निश्चित इकाई की सीमान्त उपयोगिता (Marginal utility) बाजार

Scanned with CamScanner

मूल्य (Market-price) के बराबर न हो जाय। इस प्रकार उपभोक्ता सीमान्त-उपयोगिता के बराबर ही मूल्य चुकाता है। दूसरे शब्दों में, उपभोक्ता तबतक अपने उपभोग को जारी रखता है जब तक वस्तु के लिए चुकाये जाने वाले मूल्य की तुलना में उसे अधिक सीमान्त उपयोगिता मिलती है। जिस बिन्दु पर सीमान्त उपयोगिता मूल्य के बराबर हो जाती है उसी बिन्दु पर उपभोक्ता अपने उपभोग बन्द कर देता है। इसके चलते उसे पहले की इकाइयों से अतिरिक्त उपयोगिता मिलती है जिसके लिए उसे अतिरिक्त मूल्य नहीं 'चुकाना पड़ता, क्योंकि वह केवल सीमान्त उपयोगिता के बराबर ही मूल्य देता है। पनु: बाजार में वह सभी इकाइयों के लिए समान मूल्य देता है। इस प्रकार उसे उपभोक्ता बचत प्राप्त होती है।

उदाहरण द्वारा उपभोक्ता की बचत की व्याख्या (Explanation of the consumer's surplus with an illustration)

उपभोक्ता की बचत के सिद्धान्त को हम उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं । मान लिया जाय कि बाजार से हमें पाँच कलम खरीदनी है। चूँकि पहली कलम की उपयोगिता हमारे लिए सबसे अधिक होगी अत: उसक लिए हम सबसे अधिक मूल्य चुकाने को तैयार रहेंगे। मान लिया जाय कि पहली कलम के लिए हम 10 रुपये देने को तैयार हैं। चूँकि दूसरी कलम की उपयोगिता हमारे लिए पहली से कम होगी, अत: उसके लिए हम 8 रुपये देने को तैयार होंगे। इसी प्रकार हम तीसरी के लिए 6 रुपये, चौथी के लिए 4 रुपये तथा पाँचवीं के लिए 2 रुपये देने को तैयार होंगे। अत: हमें सभी कलमों से 10 + 8 + 6 + 4 + 2 = 30 रुपये के बराबर उपयोगिता प्राप्त होगी तथा उनके लिए हम 30 रुपये तक देने को तैयार रहेंगे। लेकिन बाजार में प्रत्येक कलम की कीमत एक समान 2 रुपये के बराबर होगी क्योंकि हम देख चुके हैं कि किसी वस्तु की कीमत उसकी सीमान्त उपयोगिता के बराबर होती है और यहाँ पाँचवीं कलम की सीमान्त उपयोगिता 2 रुपये के बराबर है, अत: हमें पाँच कलमें 5 x 2 = 10 रुपये में ही मिल जायेगी तथा हमें 20 रुपये के बराबर कुल उपयोगिता की बचत प्रापत होगी। निम्नलिखित तालिका में कलम की विभिन्न इकाइयों से मिलने वाली उपभोक्ता की बचत को दिखाया गया है–

कलम की इकाइयाँ	प्राप्त उपयोगिता तथा वह मूल्य जो उपभोक्ता देने के लिए तैयार (रुपये में)	बाजार मूल्य अथवा वह मूल्य जो उपभोक्ता वास्तव में देता है (रुपये में)	उपभोक्ता की बचत (रुपये में)
पहली	10	2	10 - 2 = 8 रुपये
दूसरी	8	2	8 - 2 = 6 रुपये
तीसरी	6	2	6 - 2 = 4 रुपये
चौथी	4	2	4 - 2 = 2 रुपये
पाँचवीं	2	2	2 - 2 = 0 रुपये

ऊपर की तालिका को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि हमें पहली इकाई से 8 रुपये, दूसरी से 6 रुपये, तीसरी इकाई से 4 रुपये तथा चौथी से दूसरे के बराबर तथा कुल इकाइयों से 20 रुपये के बराबर उपभोक्ता की बचत प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner

पाँचवी इकाई से उपभोक्ता की बचत शून्य के बराबर है क्योंकि पाँचवीं इकाई की सीमान्त उपयोगिता तथा मूल्य एक दूसरे के बराबर है।

ऊपर के उदाहरण के आधार पर हम निम्नलिखित रेखाचित्र द्वारा भी उपभोक्ता की बचत की व्याख्या कर सकते हैं।

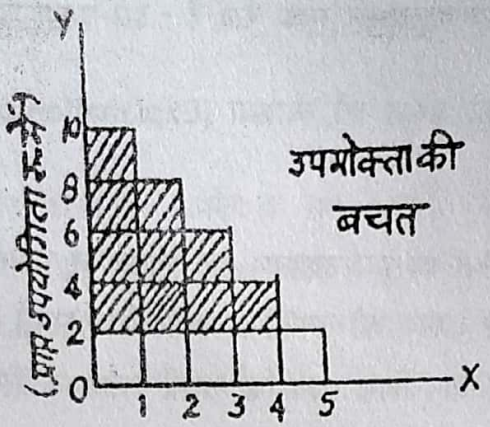

कलम की इकाइयाँ

ऊपर के चित्र में OX रेखा पर कलम की इकाइयों को तथा OY पर उनसे प्राप्त उपयोगिता को रुपये में दिखाया गया है। चित्र में रेखांकित माँग उपभोक्ता की बचत को दिखलाता है। चित्र से स्पष्ट है कि उपभोक्ता को पहली कलम से 8 रुपये (10-2) के बराबर, दूसरी से 6 रुपये (8-2) के बराबर, चौथी से 2 रुपये (4-2) के बराबर तथा पाँचवीं से शून्य (2-2) के बराबर उपीोक्ता की बचत प्राप्त होती है। इस प्रकार उपभोक्ता की कुल बचत 20 रुपये के बराबर होगी।

6.4 उपभोक्ता की बचत की माप (Measurement of consumer's surplus)

प्रो० टॉसिंग के अनुसार उपभोक्ता की बचत की माप निम्नलिखित सूत्र (Formula) के आधार पर की जा सकती है–

उपभोक्ता की बचत = कुल उपयोगिता – (सीमान्त उपयोगिता x वस्तु की इकाइयाँ)

C.S = Total Utility – (price x Number of Units purchased)

चूँकि किसी वस्तु की सीमान्त उपयोगिता उसके मूल्य के बराबर होती है, अत: ऊपर के सूत्र को इस प्रकार भी लिखा जा सकता है–

उपभोक्ता की बचत = कुल उपयोगिता – (वस्तु का मूल्य x वस्तु की इकाइयाँ)

C.S = Total Utility – (Price x Number of Units Purchased)

हमने ऊपर जो उदाहरण दिया है उसमें कलमों की कुल उपयोगिता 30 रुपये के बराबर है, सीमान्त उपयोगिता अथवा मूल्य 2 रुपये के बराबर है तथा खरीदी गई कलमों की संख्या 5 है अत:

Scanned with CamScanner

उपभोक्ता की बचत = 30 – (2 x 5)

अथवा

उपभोक्ता की बचत = 30 – 10 = 20 रुपये।

उपभोक्ता की बचत के सिद्धान्त की मान्यताएँ

इस सिद्धान्त की निम्नलिखित मान्यताएँ हैं–

(1) वस्तु की उपयोगिता को मुद्रा के रूप में मापा जा सकता है।

(2) उपभोक्ता के लिए मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता समान रहती है।

(3) वस्तु की कोई स्थानापन्न वस्तु (substitute) नहीं है।

(4) उपभोक्ता की प्रत्येक वस्तु एक दूसरे से स्वतंत्र है, अर्थात् किसी वस्तु की उपयोगिता अन्य वस्तुओं पर निर्भर नहीं करती है।

(5) उपभोक्ता की आय, रुचि, फैशन, मनोदशा इत्यादि में कोई अन्तर नहीं होगा।

6.5 उपभोक्ता की बचत की धारणा की आलोचनाएँ

अर्थशास्त्र में उपभोक्ता की धारणा का काफी महत्त्व है, किन्तु इस सिद्धान्त की आलोचनाएँ भी अधिक हुई हैं। लेकिन उपभोक्ता की बचत की धारणा की मुख्य आलोचनाएँ इस बात को लेकर है कि उपयोगिता को मापना कठिन है और इसलिए उपभोक्ता की बचत को मापना कठिन है।

(1) **उपयोगिता की माप कठिन (It is difficult to measure utility) :** उपभोक्ता की बचत की धारणा इस बात पर आधारित है कि उपयोगिता मापनीय है। किन्तु हिक्स (Hicks) की मान्यता है कि उपयोगिता को मापा नहीं जा सकता क्योंकि यह एक अमूर्त और भावात्मक धारणा है। किसी वस्तु की उपयोगिता भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के लिए भिन्न-भिन्न होती है। पुन: किसी व्यक्ति के लिए एक ही वस्तु की उपयोगिता विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न होती है। अत: उपयोगिता की माप कठिन है।

(2) **मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता समान नहीं रहती (The marginal utility of money does not remain the same) :** इस सिद्धान्त की एक मान्यता यह है कि मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता स्थिर रहती है। लेकिन यह बात सही नहीं है। मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता बदलती रहती है। जैसे-जैसे हमारे पास की मुद्रा खर्च होती जाती है वैसे-वैसे बची हुई मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता बढ़ती जाती है। उपभोक्ता की आय बढ़ने से मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता घटती है। इस तरह मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता जब अस्थिर है तो उपभोक्ता की बचत की माप कठिन है।

(3) **प्रत्येक वस्तु एक दूसरे से स्वतंत्र नहीं होते (Each commodity is not independent to each other)**

Scanned with CamScanner

इस सिद्धान्त में यह मान लिया गया है कि उपभोग की प्रत्येक वस्तु एक दूसरे से स्वतंत्र होती है, अर्थात् किसी वस्तु की उपयोगिता, अन्य वस्तुओं पर निर्भर नहीं रहती। लेकिन वास्तव में कोई भी वस्तु एक दूसरे से पूर्णत: स्वतंत्र नहीं होती। एक वस्तु पर खर्च की गयी मुद्रा दूसरी वस्तु की उपयोगिता को भी प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए हम फल या दूध के लिए कितना देने को तैयार होंगे यह केवल हमारी फलों या दूध की इच्छा पर ही निर्भर नहीं है वरन् इस बात पर भी निर्भर है कि हमने इसके पहले आटे, चावल दाल तथा सब्जी पर कितना खर्च किया है। इस प्रकार आटे या चावल या दाल पर व्यय की गयी रकम को ध्यान में रखते हुए फल या दूध से प्राप्त उपभोक्ता की बचत निश्चित ही उस उपभोक्ता की बचत से भिन्न होगी जो हमें फल या दूध की खरीद में तब मिलती है जब हम आटे-चावल-दाल पर व्यय की गयी रकम को ध्यान में नहीं रखते और फल या दूध की खरीद से ही अपना क्रय शुरू करते हैं।

(4) **पूरक एवं स्थानापन्न वस्तुओं के सम्बन्ध में उपभोक्ता की बचत को मापना कठिन है**—पूरक वस्तुओं जैसे कलम और स्याही, स्थानापन्न वस्तुओं जैसे चाय एवं कॉफी के सम्बन्ध में उपभोक्ता की बचत को मापना कठिन है। इसका कारण यह है कि इन वस्तुओं की उपयोगिता एक-दूसरे पर निर्भर करती है तथा एक की माँग में परिवर्तन का प्रभाव दूसरे की माँग पर पड़ती है। प्रो० मार्शल ने इस समस्या के समाधान के लिए सुझाव दिया है कि परस्पर सम्बन्धित वस्तुओं को एक मान लिया जाय। किन्तु इस प्रकार की मान्यता उचित नहीं है।

(5) **उपभोक्ताओं की आय, रुचि एवं फैशन में अन्तर होता है (Income, taste, fashion etc. of consumers differ)** : इस सिद्धान्त की एक यह भी मान्यता है कि उपभोक्ता की आय, रुचि एवं फैशन में अन्तर नहीं होता है। लेकिन वास्तविकता यह है कि इनमें अन्तर होता है और इसके कारण उपभोक्ता एक ही वस्तु के लिए अलग-अलग मूल्य देने के लिए तैयार होता है। एक धनी व्यक्ति किसी वस्तु के लिए किसी गरीब व्यक्ति की तुलना में अधिक मूल्य देने के लिए तैयार रहता है। फैशन में परिवर्तन भी उपभोक्ता की इच्छा की तीव्रता को बढ़ा देता है और एक वस्तु के लिए उपभोक्ता अलग-अलग मूल्य देने के लिए तैयार रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि एक ही वस्तु के लिए उपभोक्ता की बचत भिन्न-भिन्न होगी तथा इसकी सही माप नहीं की जा सकेगी।

(6) **अनिवार्यताओं तथा विलासिताओं के सम्बन्ध में उपभोक्ता की बचत मापना कठिन है (It is difficult to measure consumer's surplus in case of necessaries and laxuries)** : अनिवार्य वस्तुएँ हमारे जीवन के लिए इतनी आवश्यक होती हैं कि उनके लिए उपभोक्ता कुछ भी मूल्य देने के लिए तैयार होगा। उदाहरण के लिए एक मरता हुआ रोगी एक दवा के लिए कितना मूल्य देने के लिए तैयार होगा यह कहना कठिन है। अत: ऐसी स्थिति में उपभोक्ता में उपभोक्ता की बचत बढ़ती है। लेकिन विलासिता की वस्तुओं, जिनका मूल्य अधिक होता है तथा जिन्हें धनी व्यक्ति ही उपयोग में लाते हैं, के साथ यह बात लागू नहीं होती। विलासिता की या शान-शौकत की वस्तुओं का महत्त्व तभी है जब उनका मूल्य अधिक है। इनका मूल्य कम होने से अमीर व्यक्तियों के लिए इनका महत्त्व कम हो जाता है। इस तरह उपभोक्ता की बचत भी कम हो जाती है या समाप्त हो जाती है।

(7) **उपभोक्ता की कुल खरीद को ध्यान में रखते हुए उपभोक्ता की बचत शून्य होती है (In view of total purchases of consumer's surplus is zero)** : यदि उपभोक्ता को एक वस्तु के क्रय से बचत प्राप्त होती

Scanned with CamScanner

है तो वह उसे दूसरी वस्तु पर खर्च करना चाहता है और यदि दूसरी वस्तु के क्रय से भी उसे बचत प्राप्त होती है तो वह तीसरी वस्तु पर खर्च करेगा और यह क्रय तब तक चलता रहेगा जब तक उपभोक्ता की कुल खरीद को ध्यान में रखते हुए उपभोक्ता की बचत शून्य न हो जाय। अत: यदि हम उपभोक्ता की कुल खरीद को ध्यान में रखें तो उपभोक्ता की बचत शून्य के बराबर होगी।

(8) **उपभोक्ता प्रचलित बाजार मूल्य पर ही माँग की तालिका बनाता है :** इस सिद्धांत की व्याख्या से लगता है कि उपभोक्ता को बाजार मूल्य की जानकारी ही नहीं रहती है और उसकी माँग की तालिका एकदम काल्पनिक होती है। लेकिन वास्तविकता तो यह है कि उपभोक्ता बाजार मूल्य को जानकर ही माँग की तालिका बनाता है। अत: यह नहीं कहा जा सकता है कि मूल्य को जान लेने पर भी उपभोक्ता उससे अधिक देने को तैयार रहेगा। इस तरह उपभोक्ता की बचत का आधार ही समाप्त हो जाता है।

(9) **सम्पूर्ण बाजार के लिए किसी वस्तु के उपभोक्ता की बचत अमापनीय है (The consumer's surplus of a commodity for the whole market is immeaurable) :** किसी बाजार में विभिन्न उपभोक्ताओं की आय, रुचि, फैशन आदि अलग-अलग होते हैं जिनके कारण वे एक ही वस्तु के लिए विभिन्न मूल्य देने को तैयार होंगे। अत: यदि किसी प्रकार एक व्यक्ति की उपभोक्ता की बचत की माप कर भी ली जाय तो सम्पूर्ण बाजार के लिए किसी वस्तु के उपभोक्ता की बचत की माप करना बहुत कठिन है।

(10) **उपभोक्ता की बचत की धारणा काल्पनिक एवं भ्रामक (The concept of consumer's surplus is imaginary and misleading) :** उपभोक्ता की बचत की धारणा की आलोचना करते हुए प्रो० निकोल्सन (Nicholson) ने यहाँ तक कहा है कि यह काल्पनिक एवं भ्रामक है। उनका मानना है कि यह विचार कहाँ तक सही है कि इंग्लैंड में 100 पौंड वार्षिक आय की उपयोगिता मध्य अफ्रीका में 1000 पौंड वार्षिक आय के बराबर है। लेकिन मार्शल का जवाब है कि दो स्थानों के जीवन-स्तर की तुलना करने के लिए उपभोक्ता की बचत का उपयोग किया जा सकता है।

इस प्रकार उपभोक्ता की बचत के सिद्धान्त के विरुद्ध अनेक तर्क दिये गये हैं। वास्तव में ये आलोचनाएँ मुख्यत: उपभोक्ता की बचत की माप की कठिनाइयों को लेकर है। सैद्धान्तिक रूप में उपभोक्ता की बचत की धारणा सही है, भले ही इसकी माप में व्यावहारिक कठिनाइयाँ हों।

6.6 उपभोक्ता की बचत की धारणा का व्यावहारिक महत्त्व (Practical Importance of the Concept of Consumer's Surplus)

उपभोक्ता की धारणा का व्यावहारिक महत्त्व बहुत अधिक है। हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसके प्रयोग किये जाते हैं।

(1) **एकाधिकारी मूल्य निर्धारण में (In determination of monopoly price) :** उपभोक्ता को अपने मूल्य के निर्धारण में उपभोक्ता की बचत की धारणा से सहायता मिलती है। यदि किसी वस्तु से उपभोक्ता को बचत कम मिलती है तो एकाधिकारी उसका मूल्य ऊँचा नहीं रखेगा, क्योंकि मूल्य बढ़ने से माँग कम होगी तथा एकाधिकारी

Scanned with CamScanner

को अधिक लाभ नहीं होगा। दूसरी ओर, जिन वस्तुओं से उपभोक्ता को बचत अधिक प्राप्त होती है उनके मूल्य को बढ़ाकर एकाधिकारी अधिक लाभ कमा सकता है।

(2) **राजस्व के क्षेत्र में (In the sphere of public finance) :** सरकार को कर लगाने तथा उद्योगों को आर्थिक सहायता (Subsidies) देने में उपभोक्ता की बचत की धारणा से सहायता मिलती है। सरकार उन वस्तुओं पर अधिक कर लगा सकती है जिनके उपभोग से उपभोक्ताओं को उपभोक्ता की बचत अधिक मिलती है। लेकिन जिन वस्तुओं के क्रय से उपभोक्ता को बचत कम प्राप्त होती है उन पर अधिक कर नहीं लगाया जा सकता। इसी तरह उद्योगों की सहायता (Subsidies) तभी देनी चाहिए जब इसका लाभ उपभोक्ताओं को उपभोक्ता की बचत के रूप में मिले, क्योंकि उद्योगों को आर्थिक सहायता देने से सरकार को प्रत्यक्ष आर्थिक हानि होती है।

(3) **उपयोगिता सम्बन्धी अर्थ तथा विनिमय सम्बन्धी अर्थ के अन्तर को स्पष्ट करने में (To clarify the distinction between value in use and value in exchange) :** उपभोक्ता की बचत की धारणा यह संकेत करती है कि वस्तुओं का मूल्य प्राय: उनकी उपयोगिता का सही सूचक नहीं होता है। दूसरे शब्दों में, उपभोक्ता की बचत का सिद्धान्त उपयोगिता सम्बन्धी अर्थ (value in use) तथा विनिमय सम्बन्धी अर्थ (value in exchange) के अन्तर को स्पष्ट करता है। उदाहरण के लिए, अखबार, नमक, दियासलाई आदि वस्तुओं का मूल्य अथवा विनिमय सम्बन्धी अर्थ (value in exchange) तो कम होता है लेकिन इनकी उपयोगिता का अर्थ (valuer in use) बहुत अधिक होता है। अत: इन वस्तुओं के खरीदने से हमें अधिक उपभोक्ता की बचत मिलती है।

(4) **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में (In international trade) :** अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से प्राप्त लाभ को जानने के लिए भी उपभोक्ता की धारणा का सहारा लिया जा सकता है। हम प्राय: उन्हीं वस्तुओं का आयात करते हैं जिनका मूल्य देश में प्रचलित मूल्य से कम होता है। इस प्रकार आयात से हमें उपभोक्ता की बचत प्राप्त होती है। यह उपभोक्ता की बचत जितनी ही अधिक होगी, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार हमारे लिए उतना ही अधिक लाभदायक होगा।

(5) **दो स्थानों एवं समयों के बीच जीवन-स्तर की तुलना करने में (In comparing the standard of living at two places and during two periods) :** दो स्थानों तथा समयों के बीच लोगों के जीवन-स्तर की तुलना करने में भी उपभोक्ता की बचत की धारणा सहायक होती है। यदि एक ही रकम खर्च करने से एक ही जगह पर उपभोक्ता की बचत अधिक और दूसरी जगह पर उपभोक्ता की बचत कम मिलती है तो निश्चय ही पहली जगह के निवासियों का जीवन-स्तर दूसरी जगह के निवासियों की तुलना में बेहतर होगा। इसी प्रकार यदि भूतकाल की तुलना में वर्तमान समय में हमें उपभोक्ता की बचत अधिक मिल रही हो, तो हमारे जीवन स्तर में पहले की अपेक्षा वृद्धि हुई है।

6.7 सारांश

(A) परिभाषा : प्रो० मार्शल के द्वारा तथा प्रो० बेन्हम के द्वारा दी गई परिभाषाएँ।

(B) उपभोक्ता बचत के पीछे उपयोगिता ह्रास नियम, प्रतिस्थापन नियम की अवधारण काम करती है।

Scanned with CamScanner

(C) उपभोकता बचत की आलोचना

(A) उपयोगिता की माप कठिन है

(B) मुद्रा की सीमांत उपयोगिता

(C) उपभोक्ता की आय रुचि एवं फैशन में अन्तर होता है

(D) उपभोक्ता बचत की धारणा काल्पनिक है

6.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. उपभोक्ता की धारणा की व्याख्या करें। इसकी प्रमुख आलोचनाओं का उल्लेख करें।

2. रेखा चित्र की सहायता से उपभोक्ता की बचत की धारणा की व्याख्या करें। इसका व्यावहारिक महत्त्व क्या है ?

(Explain the concept of consumer's surplus with the help of a diagram. What is its practical importance ?)

6.9 प्रस्तावित पाठ

1. अर्थशास्त्र के सिद्धांत : डॉ. सुमन
2. अर्थशास्त्र : डॉ. एल. एम. राय
3. अर्थशास्त्र : डॉ. के. पी. सिंह
4. अर्थशास्त्र : डॉ. के. के. डेविड
5. अर्थशास्त्र के सिद्धांत : डॉ. झिंगने

Scanned with CamScanner